

गणेशजी के लड्डू

•चित्रांकन- राजेश गुजर•



माँ मैं खेल रहा हूँ.

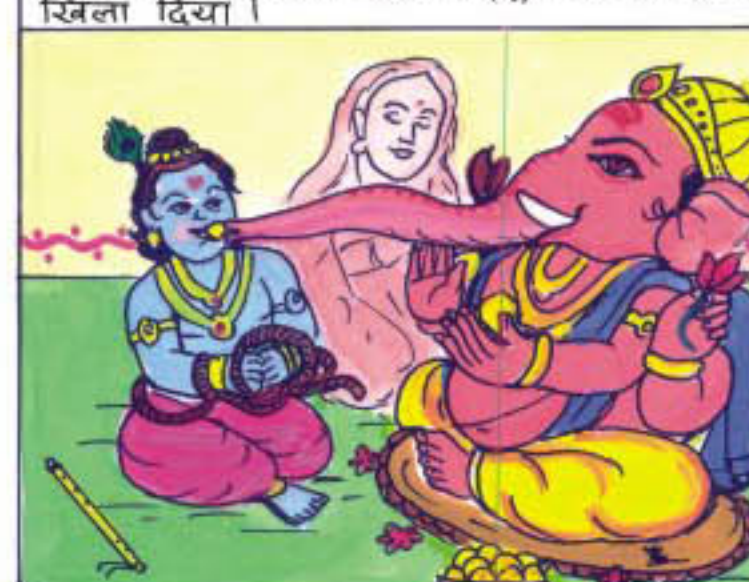
कान्हा तुम भी पूजा करो.

कान्हा पहले पूजा करो फिर लड्डू दूँगी।
पालथी मारकर बैठ जाओ हाथ जोड़ो।यशोदा मैया ने भजन
गाना शुरू किया

देवपुत्र

नटखट कान्हा भजन पूरा होने
तक रुक सकते थे क्या? धीरे
से आँखें खोलकर देखा माता
पूजा में मग्न हैं, उन्होंने हाथबंदाया,
एक लड्डू उठा
लिया।इतने में मैया का ध्यान गया और
कान्हा को डाँटने लगी।कान्हा तुम जिद मत करो मैं
तुम्हारे रस्सी से हाथ बाँध
देती हूँ।

सितंबर २०११

बच्चों तुम्हें मालूम है कि गणेशजी ने एक बार कान्हा
को कैसे लड्डू खिलाए थे, तुम्हें यह तो मालूम होगा कि
कान्हा ने बालपन में बहुत शरारत की है।
यशोदा मैया गणेशजी की पूजा करती थीं एक दिन-कान्हा कामन तो खेलने में था, वो कैसे पूजा करते
लेकिन ज्यों ही उनकी निगाह गणेशजी की
पूजा के लिए रखे लड्डूओं पर गई मुँह में पानी आ
गया। यशोदा मैया समझ गई।कान्हा झट से पालथी मारकर बैठ गए और हाथ जोड़
लिए और आँखें बंद कर ली। इच्छा तो नहीं थी
परंतु लड्डू मिलेंगे इस कारण आँखें बंद कर ली।माता ने कान्हा के हाथ रस्सी से बाँध दिए और
निश्चिंत होकर पूजा करने लगी।फिर गणेशजी ने सूँडसे कान्हा की रस्सी खोल
दी और लड्डू की थाल आगे कर दी।ऐसी दशा देखकर गणेशजी को बड़ी दया और
प्यार आया। उन्होंने सूँडसे लड्डू उठाकर कान्हा को
खिला दिया।माता का ध्यान गया तो, कान्हा को लड्डू खाते
देखा, उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।
ऐसे थे गणेशजी।

समाप्त